शान्ति का मृदंग बजाओ

केदार द्वारा एक संगीतमय प्रस्तुति

श्रीगुरुमाई जी, बाबा जी और बड़े बाबा जी को मेरा साष्टांग नमस्कार।

आप सभी का अभिवादन! सिद्धयोग वैश्विक हॉल में आप सभी के साथ होते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। मई का माह बाबा जी का माह है। बाबा मुक्तानन्द के जन्मदिवस महोत्सव के सम्मान में आयोजित सिद्धयोग ऑडिओ सत्संग का शीर्षक है, "नाद, आत्मा, शान्तचित्तता", और आज मैं भरपूर नादों की रचना करने के लिए अपना मृदंग लेकर यहाँ आया हूँ।

जब मैं छोटा था—आज से भी छोटा—मेरे नाना जी ने मुझे बताया कि मृदंगम् "दैववाद्यम्" है। जब भगवान शिव ने सृजन का आदि नृत्य यानी ताण्डव नृत्य किया था तब नन्दी ने मृदंगम् का वादन किया था। मुझे मृदंगम् बहुत पसन्द है क्योंकि इसमें मैं आदि ध्वनि "प्रणव नाद" ॐ के तीनों वर्ण सुन पाता हूँ। मैं आपको दिखाता हूँ।

तोम् *[वह अपने मृदंग पर इस स्वर को बजाता है।]*

धी *[वह अपने मृदंग पर इस स्वर को बजाता है।]*

और "चापु" नामक एक अनूठी ध्वनि है जो केवल मृदंगम् द्वारा ही उत्पन्न होती है। *[वह अपने मृदंग पर इस स्वर को बजाता है।]*

आज, गुरुमाई जी के लिए—जिनसे मैं बहुत प्यार करता हूँ—बजाने का मेरा सपना सच हो रहा है, और मैं बहुत खुश व कृतज्ञ हूँ। मैं एक रचना प्रस्तुत करूँगा जो कि आदि तालम् में बनाई गई है; आदि तालम् प्रसिद्ध आठ मात्राओं का ताल है। इस रचना में चार भाग होते हैं। मैं ताल का और इसके विभिन्न प्रकारों का विस्तार करके आरम्भ करूँगा . . .

मेरी प्रार्थना है कि मृदंगम् की ध्वनियाँ हमें खुशी और शान्ति से भर दें।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।